458वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 39 | तृतीय अंक | अक्टूबर 2016

इस अंक में...

12 पूरा जीवन ही जोखिम है, जोखिम उठाने की क्षमता बढ़ाइए....
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
26 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
33 नवीनतम सामान्य ज्ञान
41 राज्य समाचार
42 खेलकूद
45 रियो डि जेनेरो में 31वें ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेल सम्पन्न : भारत को केवल दो पदक मिले
50 रोजगार समाचार
51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
54 युवा प्रतिभाएं
63 स्मरणीय तथ्य
66 विश्व परिदृश्य
72 विधि-निर्णय
73 फोकस—तेजी से उभरता भारत का सेवाएं क्षेत्रक
77 जनसंख्या लेख—बढ़ती जनसंख्या विकास में बाधक
83 समसामयिक लेख—चौथा नाभिकीय सुरक्षा सम्मेलन
87 सांस्कृतिक लेख—भारत की प्रमुख सांस्कृतिक संस्थाएं एवं संगठन
90 कानूनी लेख—महिलाओं के हित में है समान सिविल संहिता
92 सामयिक लेख—भारत-ईरान द्विपक्षीय सम्बन्ध
95 पर्यावरणीय लेख—पेरिस जलवायु समझौते की उम्मीदें
96 प्राकृतिक आपदा—झुलसता जंगल और बिगड़ता पर्यावरण
99 सद्भाव लेख—साम्प्रदायिक उपद्रव-कारण और निदान
101 अन्तरिक्ष लेख—उपग्रह प्रक्षेपण वाहन
104 सार संग्रह
108 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान—(i) उत्तराखण्ड प्रवक्ता स्क्रीनिंग परीक्षा, 2015
119 (ii) यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
125 (iii) मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग राज्य वन सेवा परीक्षा, 2014
133 (iv) सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा, 2016
148 (v) उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग सम्मिलित अवर अधीनस्थ सेवा-I परीक्षा, 2016
157 (vi) छत्तीसगढ़ श्रम-इंस्पेक्टर परीक्षा, 2015
162 अंतरवैयक्तिक संचार—आगामी संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
164 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
166 ऐच्छिक विषय—(i) दर्शनशास्त्र-यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
170 (ii) गृह विज्ञान—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
178 वार्षिक रिपोर्ट 2015-16—स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सम्बन्धी अनुसंधान और विकास क्षेत्र में गतिविधियाँ : एक दृष्टि में
180 महात्मा गांधी का जीवन-क्रम
182 तर्कशक्ति—(i) आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक पी.ओ./एम.टी. परीक्षा, 2015
188 (ii) आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक आई.टी. ऑफीसर परीक्षा, 2015
194 मात्रात्मक अभिक्षमता—बैंक ऑफ बड़ौदा प्रोबेशनरी ऑफीसर स्केल-I परीक्षा, 2015
202 क्या आप जानते हैं ?
203 अपना ज्ञान बढ़ाइए
204 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक—175
207 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—विज्ञान की सार्थकता उसके अनुप्रयोग में
210 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-447 का परिणाम

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

पूरा जीवन ही जोखिम है, जोखिम उठाने की क्षमता बढ़ाइए....

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

"Life is inherently risky. There is only one big risk you should avoid at all costs and that is the risk of doing nothing."

— Denis Waitley

सत्यज्ञानी श्री विराट गुरुजी के एक जिज्ञासु ने प्रश्न किया कि–"हे गुरुदेव ! हमारे" जीवन में ये संघर्ष आखिर कब तक रहेंगे ? और मुसकराते हुए गुरुजी बोले कि "जब तक जीवन रहेगा, तब तक संघर्ष रहेंगे, होते रहेंगे. जीवन तक जोखिम ही जोखिम है. जन्म से लेकर मृत्यु तक, पहले श्वास से लेकर आखिरी श्वास तक ..... पूरा जीवन ही जोखिम भरा है. हर पल विपरीतताएं हैं, इन्हीं विपरीतताओं में सारा विकास सम्भव है."

न केवल हमारा जीवन, बल्कि प्राणी मात्र का जीवन जोखिम भरा है. चन्द्र-सूर्य को भी ग्रहण लगता है, देवताओं व असुरों में भी परस्पर संघर्ष होता है, नरक लोक तो दुःखों का घर है, पशु जीवन भी कम जोखिमपूर्ण नहीं है, जब कभी हम अपने आसपास के जीवधारियों को देखते हैं, तो प्रतीत होता है कि सबसे कम जोखिमपूर्ण जीवन शायद हमारा है. हम बहुत सुखीप्रद हैं, अन्य जीव-धारियों की अपेक्षा, किन्तु हमारे जीवन की जोखिमें भी उसी स्तर में आती-जाती हैं, जिस स्तर पर हम स्वयं को बढ़ाना चाहते हैं. जमीन पर चलने में जोखिम कम है, किन्तु शिखरों की चढ़ाई चढ़ते हैं, तो जोखिम अधिक होगी. जमीनी संघर्ष भूख के लिए रोटी का होना, रहने के लिए कुटिया-मकान का होना, किन्तु इस संघर्ष के सिवाय और भी अनेक संघर्ष हैं, जो जीवनभर हमारी महत्वाकांक्षाओं के कारण पैदा होते रहते हैं.

जिस व्यक्ति की इच्छाएं कम हैं, उसके संघर्ष भी कम होंगे, जिसकी इच्छाएं ज्यादा हैं, उसके संघर्ष भी अधिक हैं. जीवन का और जोखिम का चोली-दामन का साथ है. जितनी जोखिम लेने की क्षमता बढ़ाते जाएंगे, उतना ही विकास का स्तर भी बढ़ जाएगा. बिजनेस मेंनेजमेंट में यह फॉर्मूला सिखाया जाता है कि–

"No Risk, No Gain
Take Pain, Receive Gain."

जोखिम होते ही क्यों हैं ?

इस प्रश्न का समाधान देते हुए किसी समय विराट गुरुजी ने कहा था कि "यह सृष्टि चित्तों का जंगल है. हरएक व्यक्ति की भावशक्ति अपनी-अपनी सुविधाओं को पाने के लिए कार्यरत् है, ऐसे में परस्पर टकराहट होना स्वाभाविक-सा है." इसे ऐसे समझें कि जब एक व्यक्ति मुम्बई की लोकल ट्रेन में चढ़कर यात्रा करना चाहता है, तब वह जल्दबाजी में ट्रेन में चढ़ना चाहता है, ठीक उसी समय अनेक लोग ट्रेन से नीचे उतरना चाहते हैं, सबको जल्दबाजी मची है, ऐसे में चढ़ने वाले उतरने वालों से टकराते हैं और इस धक्कामुक्की में कुछेक लोग घायल भी हो जाते हैं. यहाँ जरा-सा विवेक अपनाया जाता कि पहले उतरने वालों को उतरने दिया जाता, फिर चढ़ने वाले आराम से चढ़ जाते, किन्तु हम देखते हैं कि यहाँ हरेक को जल्दबाजी है. जल्दबाजी है अपनी इच्छाओं को पूरी करने की ..... इस अधीरता के कारण ही आए दिन सड़कों पर दुर्घटनाएं होती रहती हैं ..... अनेक लोग जल्दी, कम समय में, कम मेहनत में अधिकाधिक धन कमाने की लालसा में ऐसे व्यवसायों का चयन कर लेते हैं कि उन्हें जोखिमों में गिरना ही पड़ता है. अनैतिक धन्धों की जोखिम उठाना जरा भी बहादुरी नहीं है, बल्कि वह तो दुस्साहस है, जिसका खामियाजा दण्ड, बीमारी व विपत्तियों के रूप में उठाना ही पड़ता है. इस तरह से अगर हम जोखिम शब्द का विश्लेषण करें, तो पाएंगे कि एक हैं अविवेकी जोखिमें व दूसरी हैं प्राकृतिक व आवश्यक नैतिक जोखिमें. आग में हाथ डालना, कुएं की पाल पर रस्सी बाँध कर चलना, आँख मींचकर गाड़ी चलाना, सरकार द्वारा प्रतिबन्धित व्यापारों को करना, अप्राकृतिक आहार व विहार करना अविवेकी जोखिमें हैं. ऐसी जोखिमें, जो हम घमण्ड में, तैश में, ईर्ष्या, लोभ व अधैर्यवश निमन्त्रित कर लेते हैं, वे सभी जोखिमें बेवकूफियाँ हैं, नादानियाँ हैं.